Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नमक आन्दोलन में मुजफ्फरनगर की भूमिका

डॉ. सचिन कुमार*

***एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास) डी0 ए0 वी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत**

शोध सारांश – मुजफ्फरनगर गंगा और यमुना के दोआब में मेरठ परिक्षत्र के दक्षिण व सहारनपुर के उत्तर में स्थित है इसकी सीमाएं बिजनौर व हरियाणा से भी मिलती है यह जिला अनेकों तहसीलों में विभक्त है।

मुगल शासक शाहजहाँ ने सैयद नसिरूददीन को खिताब के रूप में अबुल मुजफ्फर की उपाधि व खातौली परगने के चालीस गाँव और दस हजार बीधा जमीन ईनाम में दी। आगे चलकर इसी खिताब के ऊपर इस शहर का नाम मुजफ्फरनगर पड़ा।

मुजफ्फरनगर के प्राचीन इतिहास के विषय में प्रामाणिकता का अभाव सा दिखता था। परन्तु जिस समय यह शोध पत्र लिखा जा रहा है उससे पूर्व के दशक में मुजफ्फरनगर शहर के पश्चिम स्थित माँडी गांव में एक किसान के खेत से कुछ सोने के आभूषण व मिटटी के बर्तनों के अवशेष मिले। जब इन अवशेषों का भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा परीक्षण किया गया तो इनकी तिथि हडप्पा सभ्यता तक जाती है। इसके अतिरिक्त यहां से कुषाणकालीन सिक्के प्राप्त हुए है

इस शहर ने मुगल काल से लेकर आजादी की पहली किरण तक के सफर को अपने अन्दर समाया हुआ है। और देखा है कैसे वहसी अंग्रेज अधिकारियों के बगलों को नष्ट किया गया है व कैसे सरकारी खजाने को लूटा गया है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर गांधीजी द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में भी इस शहर अपनी सहभागिता की। नमक आन्दोलन में तो यहां कि जनता ने बढ-चढकर हिस्सेदारी की इनमें महिला पुरुष दोनों ही शामिल थे।

शब्द कुंजी – मेरठ, क्रान्ति, नमक आन्दोलन, गांधीजी।

शोध का उद्देश्य : इस शोध पत्र में नमक आन्दोलन से जुडे मुजफ्फरनगर के महान स्वतन्त्रता सेनानियों के योगदान को इतिहास में उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त इतिहास से जुडे शिक्षकों व शोधार्थी को भी इसका लाभ मिल सके।

शोध विधि : प्रस्तुत शोधपत्र विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक विधि पर आधारित है इस शोधपत्र में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग करते हुए सार्थक निष्कर्ष पर पहुचनें का प्रयास किया गया है।

व्याख्या: मुजफ्फरनगर की धरा हमेशा आन्दोलनों की साक्षी रही है जैसे रौलट एक्ट से जुडा आन्दोलन हो ,असहयोग आन्दोलन हो। यहां कि जनता ने हमेशा गांधी जी के आन्दोलनों में बढ-चढकर हिस्सा लिया है। वर्ष 1919 ई0 को गांधी जी ने यहां का दौरा किया जनता ने उनका खुले दिल से स्वागत किया।[1] इस आगमन से यहां के निवासियों में एक नई आशा की किरण व कुछ करने की उत्कण्ठा जाग्रत हुई।[2]

कांग्रेस संगठन की सक्रियता : सविनय अवज्ञा आन्दोलन में मुजफ्फरनगर जनपद की जनता ने सक्रिय रूप से सहयोग दिया व कांग्रेस संगठन ने अनेक शिक्षित एवं सम्मानित लोगों को सदस्य के रुप में शामिल किया। इनमें मदन मोहन मित्तल, अम्बा प्रसाद,बाबू गुरुदत्त खन्ना, पं0 शेर सिंह कश्यप, बाबू चन्द्रमुनी एडवोकेट,तथा डॉ. बलबीर नरायण शर्मा आदि प्रमुख थे।[3]

जनमानस ग्रामीण की भागीदारी : जनपद की ग्रामीण जनता में आन्दोलन के प्रति रुचि जाग्रत करने हेतु ठाकुर अमीर सिंह, राम स्वरुप, हरि सिंह, श्रीमती ज्ञानदेवी आदि लोगों को जिम्मेदारी दी गयी।[4] नमक सत्याग्रह शुरू होने से पूर्व जनपद में स्थान-स्थान पर कांग्रेस कमेटियों को संगठित किया गया जिससे सविनय अवज्ञा आन्दोलन को सुचारू रूप से चलाया जा सके।[5]

जिस समय देशभर में सत्याग्रह की तैयारी पूरी जोर-शोर से चल रही थी उसी समय जनपद के लोगों में भी उत्साह अपने उच्चतम स्तर पर था। वह तो केवल गांधी जी के आहवान का इन्तजार कर थे। 6 अप्रैल 1930 के दिन गांधी जी नमक कानून तोडने वाले थे। इसी समय एक जत्था रघुनन्दन स्वामी के नेतृत्व में शामली से मुजफ्फरनगर के लिए रवाना हुआ।[6] जिस राह से भी यह जत्था गुजर रहा था वहां के लोगों ने उनका दिल खोलकर स्वागत किया। और यहां के लोगों ने 13 अप्रैल की तारीख को नमक कानून तोडने के लिए चुना, और जनपद के एक क्षेत्र जलालाबाद में जाकर नमक कानून को तोडा क्योंकि यहाँ की मिटटी में नमक की मात्रा थी। इस समय जनपद के लोगों बढ चढकर हिस्सा लिया।[7]

सत्याग्रहियों का दमन : इस घटना के पश्चात ब्रिटिश पुलिस ने मास्टर विष्णुचन्द्र व चौदह अन्य लोगों को गिरफ्तार कर लिया।[8] इस समय लाला उग्रसेन, रधुनन्दन स्वामी व अन्य लोगों को भी गिरफ्तार किया गया। इन गिरफ्तारियों ने आम जनमानस में और अधिक जोश भर दिया और उन्होंने ब्रिटिश पुलिस के समक्ष गगनभेदी नारे लगाये।[9] गिरफ्तार लोगों को थानाभवन थाने की एक तंग हवालात में रखा गया परन्तु आन्दोलनकारियों के चेहरों पर किंचित मात्र भी परेशानी नही थी

आन्दोलनकारियों पर धारा 447-143 तहत मुकदमा चलाया गया।

इसमें मास्टर विष्णुचन्द्र, लाला उग्रसेन जैन सर्राफ, रघुनन्दन स्वामी को छ:-छ: मास की सजा व 50-50 रूपया आर्थिक दंड दिया गया।[10]

इसी क्रम में 22 अप्रैल को मुजफ्फरनगर स्थित काली नदी के किनारे 11 आन्दोलनकारियों ने नमक बनाया।[11] नमक बनाते समय आम जनता दर्शकों के रूप में वहां उपस्थित होकर उनका हौंसला बढा रही थी।

स्वदेशी व मद्यनिषेध आन्दोलन : नमक सत्याग्रह के साथ-साथ स्वदेशी व मद्यनिषेध का कार्यक्रम भी चल रहा था। गांधी जी के आहवान पर श्रीमती सावित्री देवी के नेतृत्व में महिलाओं के दल ने विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना दिया।[12] धरनारत आन्दोलनकारियों का दमन बडी ही निर्ममता से किया जाता था। ब्रिटिश हुकुमत इन खबरों को छुपाने के लिए समाचार पत्रों पर भी सेंसर लगाती थी।[13] विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में शामिल लोगों पर ब्रिटिश हुकुमत ने मुकदमें चलाकर सजाएं मुर्करर की। इनमें मूल रूप से एलम निवासी कुन्दन सिंह 6 माह की सजा व मदन मोहनलाल को विदेशी वस्त्रों बहिष्कार के लिए 6 माह की सख्त सजा दी गई।

इस आन्दोलन में महिलाओं को भी पुलिस की बर्बर कार्यवाई का सामना करना पडा। शामली थानें का एक अधिकारी जिसका नाम असलम खाँ था उसने महिला आन्दोलनकारी ज्ञानदेवी को मोटरगाडी से उतारकर बडी ही बेरहमी से उसके साथ बडा ही अमानवीय व्यवहार किया। इस अमानवीय घटना के पश्चात उनका गर्भ तक गिर गया था। जब इसकी सूचना ग्रामीणों को मिली तो उनमें आक्रोश भर गया।[14]

कांग्रेस के जिन तीन स्थानीय नेताओं को फैजाबाद की जेल में 6 माह के कारावास के लिए भेजा गया था। जिनमे लाला उग्रसेन, विष्णुचन्द्र व रघुनन्दन स्वामी थे। अपनी सजा पुरी होने के पश्चात जब वे मुजफ्फरनगर लौटे तब उनके सम्मान मे विशाल सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में रघुनन्दन स्वामी ने फिर अपना जोशिला भाषण दिया जब अगले दिन इसकी सूचना जिलाधिकारी को मिली तो उन्होने पुन: रघुनन्दन स्वामी को गिरफ्तार करने का आदेश दिया लेकिन पुलिस उन्हे गिरफ्तार नही कर सकी। और वह वापस शामली पहुॅचने में सफल रहे।

जब-जब गांधी जी ने आन्दोलनों का आवाहन किया यहां के जनमानस ने उसमें अपनी हिस्सेदारी की। चाहे वह नमक आन्दोलन हो, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हो। इसके अतिरिक्त स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार करने का जिम्मा भी यहां के आम जनमानस ने अपने ऊपर ले लिया था। इससे राष्ट्रीयता का भाव भी बढने लगा। स्वदेशी वस्तुओं को गांव-गांव तक पहुंचाने की जिम्मेदारी कांग्रेसी नेताओं को भी दी गयी थी।[15]

निष्कर्ष : नमक आन्दोलन में मुजफ्फरनगर की भूमिका यह इंगित करती है कि भारत के छोटे-छोटे जनपद और ग्रामीण क्षेों ने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । स्थानीय जनमानस की सक्रिय भागीदारी, कांग्रेस कार्यकर्ताओं का संगठन और ब्रिटिश दमन के बावजूद आन्दोलन को जारी रखना इस क्षेत्र की राष्ट्रीय चेतना का प्रमाण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. श्री रामनाथ सुमन: उत्तर प्रदेश में गांधी जी, सूचना विभाग,लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
2. साक्षात्कार : श्री सुमत प्रसाद जैन।
3. साक्षात्कार :श्री सरदू सिंह बजाज।
4. दृष्टव्य :श्री रघुनन्दन स्वामी की डायरी।
5. वही।
6. दृष्टव्य :श्री रघुनन्दन स्वामी की डायरी।
7. साक्षात्कार :श्री सरदू सिंह बजाज।
8. हिन्दुस्तान टाइम्स : 24 अप्रैल 1930 ।
9. दृष्टव्य :श्री रघुनन्दन स्वामी की डायरी।
10. वही।
11. हिन्दुस्तान टाइम्स : 25 अप्रैल 1930 ।
12. साक्षात्कार : श्रीमती सावित्री देवी।
13. साक्षात्कार :श्री सरदू सिंह बजाज। ; साक्षात्कार : डॉ. रामनाथ।
14. दृष्टव्य :श्री रघुनन्दन स्वामी की डायरी।
15. साक्षात्कार :श्री सरदू सिंह बजाज।

****